English

setuu अध्याय 18

0

Soul Himanshu

Like You and 20K others like this.

ऋषि विश्वामित्र का उदय : 'कामधेनु पहेली' और 'त्रिशंकु विश्व' का वर्णन स्वयं हनुमान जी द्वारा

छोटे से अंतराल के पश्चात् चरण पूजा का छटा सत्र शुरू हुआ | इस सत्र की यजमान थी कालजीत नामक एक मातंग महिला | इससे पहले कि वह हनुमान जी के पवित्र चरणों में अपना अर्पण भेंट कर पाती , उसकी आत्मा का पवित्र किया जाना आवश्यक था | इसके लिए हनुमान जी ने निम्नांकित ज्ञान शब्द कहे |

"हे मातंगो ,जैसा कि मैंने आपको बताया , सतयुग के अंत में मानवलोक की आत्माओं को मुख्यतः तीन वर्गों में विभाजित किया गया - (१) ऋषि (२) पृथु (३) निषाद | ऋषि आश्रमों में रहा करते थे – मुख्यधारा के समाज से परे | इन आश्रमों में अभी भी सतयुग जैसी शक्ति थी | जैसे भोजन के एक दाने के बिना आश्रम पूरी सेना का पेट भर सकते थे | ऋषियों के कहने पर इंद्र देव अपने अस्तित्व के द्रव से कुछ भी बना देते थे |

"कल्पना करो कि एक भूखी प्यासी सेना किसी आश्रम के पास से गुजर रही है | उनकी भूख अचानक समाप्त हो जाती है और उन्हें महसूस होता है कि उन्होंने सबसे अच्छा भोजन किया है | क्या वे इस चमत्कार का रहस्य जानने के उत्सुक नहीं हो जायेंगे ? रोजी रोटी कमाने में उनकी रूचि ख़त्म हो जायेगी और वे उस जादुई चीज की खोज में लग जायेंगे जिससे बिना पुरुषार्थ किये सभी इच्छाएं पूरी हो जाती हैं | वे ऋषियों पर आक्रमण और आश्रमों को तहस नहस करने की हद तक भी जा सकते हैं | समाज के टुकड़े हो जायेंगे |

"ऐसी स्थिति उत्पन्न न हो इसके लिए ऋषि जिसकी भी सहायता करते थे उसकी स्मृति बदल देते थे | अतः एक आश्रम के पास से गुजर रही एक सेना की भूख मिट जाती थी और उन्हें पता भी नहीं चलता था | ऋषियों के आशीर्वाद से गरीबों को धन ; बीमारों को स्वास्थ्य ; बांझो को बच्चा ; भटके हुओ को उद्देश्य ; आशाहीनो को आशा मिल जाती थी और उन्हें पता भी नहीं चलता था |

"लेकिन कई बार ऋषि इस रहस्य को उस मनुष्य के सामने उजागर कर देते थे जो इस रहस्य को जानने के योग्य होता था | ऐसी ही एक आत्मा थी कर्तावीर्य नामक राजा की जो हैहय राज्य के राजा थे | महिस्मती उनकी राजधानी थी |

"एक दिन कर्तावीर्य अर्जुन अपनी सेना के साथ ऋषि जमादाग्नी के आश्रम के पास से गुजर रहे थे | उसकी सेना भूखी और थकी हुई थी | उसने अपने सेनापति को आदेश दिया – "सेनापति , सैनिको को कुछ देर यहाँ आराम करने दो | सैनिको के लिए भोजन का बन्दोबस्त करने के लिए मेरे पास कोई उपाय नहीं बचा है | मैं ऋषि जमदग्नि से मिलने जा रहा हूँ | शायद वहां कोई उपाय मिल जाए | आशा करो की आज रात हमारे सैनिको को अच्छा भोजन मिले |"

"अर्जुन स्वयं भी भूखा था | उसके लिए खाना उपलब्ध था लेकिन वह इसलिए नहीं खा रहा था क्योंकि उसके सैनिक भूखे थे | जब वह ऋषि जमदग्नि के आश्रम की सीमा के अन्दर घुसा , उसकी भूख शांत हो गई | उसकी याददाश्त कुछ इस तरह बदल दी गई कि वह अपनी सेना के बारे में सब कुछ भूल गया | वह सीधे उस स्थान पर गया जहाँ ऋषि जमदग्नि और उनकी पत्नी मौन अवस्था में बैठे हुए थे | उसने उनको प्रणाम किया और चुपचाप उनके चरणों के समीप जाकर बैठ गया |

"कुछ समय बाद ऋषि ने अपना मौन तोडा और बोले – "हे अर्जुन , बोलो यहाँ कैसे आना हुआ ?"

""भूख गुरुदेव|" अर्जुन बोला – "ज्ञान की भूख | मैं ऋषियों द्वारा निर्धारित नियमों के अनुसार जीवन जीता हूँ | मैं अपनी प्रजा को खुश रखने की कोशिश करता हूँ | मैं सब कुछ अपने धर्म के अनुसार करता हूँ | लेकिन कही अंतर्मन की गहराई में एक शुन्यता सी है | मैं आत्मा , कर्म , काल , अस्तित्व , त्रिदेव आदि के बारे में जानता हूँ | लेकिन वह सब ज्ञान मेरे दिमाग के अन्दर किसी सुखी लकड़ी के ढेर की तरह बैठा है जिसे चिंगारी की प्रतीक्षा है | एक चिंगारी जो इस सारे ज्ञान को यथार्थ कर देगी और मेरा ज्ञानोदय हो जाएगा | एक चिंगारी जो पल भर में सब कुछ सपष्ट कर देगी |

"ऋषि जमदग्नि बोले – "हे अर्जुन , तुम्हे चिंगारी तब मिलेगी जब तुम चिंगारी पाने के योग्य हो जाओगे |"

"राजा कर्तावीर्य अर्जुन का ऋषि जमदग्नि के आश्रम में सत्संग घंटो चला | उसे समय का आभास ही नहीं रहा | जब उसे समय का आभास हुआ तब तक अगली सुबह हो चुकी थी | उसे नवीनता का अनुभव हो रहा था | जब वह आश्रम के बाहर आया तभी उसको अपनी सेना की याद आई | वह सीधे अपने सेनापति के पास पहुंचा और बोला – "सेनापति , हमारे सैनिक सावधान अवस्था में क्यों है? वे भूखे हैं , उन्हें विश्राम अवस्था में होना चाहिए जब तक कि मैं खाने का प्रबंध न कर लूँ |"

"सेनापति ने उतर दिया – "क्षमा चाहता हूँ राजन , हमारे सैनिक भरपेट और उर्जावान हैं | हम एक मित्र राज्य के सीमा में हैं | इस जगह के राजा ने मेहरबानी करके कल रात हमारी मेजबानी की | आप और सेना कल रात शाही अतिथि गृह में ठहरे हुए थे | हममे से कोई भी भला भूखा क्यों होगा ?"

"राजा अर्जुन सदमे में आ गए | वे बोले – "क्या तुम मेरे साथ मजाक कर रहे हो ? मैं पूरी रात ऋषि जमदग्नि के साथ सत्संग में था | हमारी सेना भी यही ठहरी हुई थी और भूखी थी |"

"सेनापति कोई व्यंग्य नहीं कर रहा था | ऋषि जमदग्नि ने इंद्र देव को कहकर पूरी सेना का पेट भर दिया था और उनकी याददाश्त बदल दी थी | उन्होंने राजा अर्जुन की स्मृति को उद्देश्यपूर्ण ढंग से ज्यों का त्यों रखा था क्योंकि वे उसको आश्रम का रहस्य बताना चाहते थे |

"राजा अर्जुन आश्रम की तरफ पुनः भागा और ऋषि जमदग्नि के पैरों में गिर पड़ा | वह बोला – "गुरुदेव , क्या मैं किसी भ्रम अथवा सपने में हूँ ? मुझे याद है कि कल रात मैं आपके साथ था | आपने जो भी कहानियां मुझे सुनाई वे सब मुझे याद हैं | मुझे याद है कि मैंने कल शाम अपनी सेना को आपके आश्रम के बाहर छोड़ा था और वे सब भूखे थे | अब वे कह रहे हैं कि वे यहाँ नहीं बल्कि शाही अतिथि गृह में थे | वे कहते हैं कि मैं भी उनके साथ था | सत्य क्या है गुरुदेव? कृपा मेरा भ्रम तोडिये |"

"ऋषि जमदग्नि ने उत्तर दिया – "हे राजन , शांत हो जाओ | पहले ये बताओ कि ये "मैं" कौन है जिसके बारे में तुम जानना चाहते हो ?"

"राजा अर्जुन ने तुरंत उत्तर दिया – "गुरदेव , 'मैं' से मेरा मतलब इस देह से है | कल रात मेरी ये देह कहाँ थी ? आपके आश्रम में अथवा ... ?"

"राजा अर्जुन अपना वाक्य पूरा नहीं कर सका | भगवान् इंद्र ने अस्तित्व के द्रव का प्रयोग करके एक अन्य भ्रम पैदा कर दिया था | अब वहां पर राजा अर्जुन की हजारों समरूप देह थी | उसकी आत्मा भ्रमित हो गई | सभी देहों ने एक आवाज में कहा – "मैं कौन हूँ ?"

"ऋषि जमदग्नि बोले – "तुम किस देह की बात कर रहे हो, अर्जुन ? यहाँ तो हजारों देह हैं |"

"जब देव इंद्र ने अपना भ्रम वापिस ले लिया , राजा अर्जुन बुदबुदाए – "यह सपना है … मैं किसी स्वपन में हूँ … मैं स्वपनलोक में हूँ .."

"ऋषि जमदग्नि बोले – "यह मानवलोक है , स्वपनलोक नहीं अर्जुन | मैं मानवलोक का एक रहस्यमय पहलु तुम्हारे सामने उजागर कर रहा हूँ क्योंकि तुम इस रहस्य को जानने के योग्य हो | हाँ , कल रात तुम यहाँ थे और तुम्हारी सेना आश्रम के बाहर ही ठहरी थी | मैंने तुम्हारी पूरी सेना का पेट भरा और उन सबकी स्मृति बदल दी | अगर तुम इस बारे में पता करने शाही अतिथि गृह में जाओगे , वे भी यही कहेंगे कि तुम सब कल रात शाही अतिथि गृह में ठहरे थे , क्योंकि मैंने उनकी भी स्मृति बदल दी है | इस विश्व का जर्रा जर्रा यही कहेगा कि कल रात तुम शाही अतिथि गृह में थे | मैंने तुम्हारी स्मृति को इसलिए ज्यों का त्यों रखा है कि तुम्हे सत्य का साक्षात्कार हो | अगर मैंने तुम्हारी स्मृति भी बदल दी होती तो तुम अपनी यात्रा पुनः शुरू कर देते और तुम्हे कुछ पता ही नहीं चलता कि क्या हुआ था | लेकिन हे अर्जुन , तुम विशेष हो | तुममे इस सत्य को सहन करने की योग्यता है , इसलिए यह सत्य तुम्हारे सामने उजागर किया गया है |"

"राजा अर्जुन बोला – "अगर ये सत्य है तो मैं अवश्य ही इस सत्य को संभालने योग्य नहीं हूँ | मैं बहुत कमजोर महसूस कर रहा हूँ | मैं ऐसे वृक्ष की भांति हो गया हूँ जिसने अपने जड़ें खो दी हैं और कभी भी गिर सकता है | मुझे क्या विश्वास करना चाहिए और क्या नहीं ? आपने केवल याददाश्त नहीं बदली है , आपने एक नई वास्तविकता को जन्म दे दिया है | मेरे लिए वास्तविकता यह है कि कल रात मैं आपके आश्रम में था लेकिन बाकी संसार के लिए वास्तविकता यह है कि मैं शाही अतिथि गृह में था | मेरे लिए वास्तविकता यह है कि आपने पूरी सेना का पेट भरा लेकिन बाकी संसार के लिए वास्तविकता यह है कि उन्होंने शाही अतिथि गृह में भोजन किया | अगर आप बिना कोई पुरुषार्थ किये ऐसे चमत्कार कर सकते हो तो मेरा परिश्रम करके अपनी और अपनी प्रजा की भलाई में जुटे रहने का क्या लाभ ? इस जीवन को जीने का क्या लाभ ? मेरे लिए जीवन का उद्देश्य ही ख़त्म हो गया है | मैं अपने जीवन की यात्रा यही समाप्त कर देना चाहता हूँ |"

"ऋषि जमदग्नि ने उत्तर दिया – "हे राजन , यह रहस्य तुम्हे इसलिए बताया गया है क्योंकि तुममे ऋषि बनने की योग्यता है | पता करो कि मैंने यहाँ पर बैठे बैठे पूरी सेना का पेट कैसे भरा और उनकी स्मृति को कैसे बदला? इन उत्तरों को पाने की प्रक्रिया में तुम्हे ज्ञान प्राप्ति होगी | तुम्हे वे सारी शक्तियाँ मिलेंगी जो मेरे पास हैं |"

"राजा अर्जुन को जीवन का नया उद्देश्य मिल गया | वह बोला – "गुरुदेव , मैं कहाँ से शुरू करूँ ? मुझे मार्ग दिखाइए | मुझे वो ज्ञान दीजिये जो इस खोज में मेरी सहायता करे |"

"ऋषि जमदग्नि बोले – "हे अर्जुन , जो ज्ञान इसके लिए चाहिए वो पहले से ही तुम्हारे पास है | इससे अधिक ज्ञान से कोई फायदा नहीं है , वह जाकर तुम्हारे दिमाग में बैठ जाएगा | इसलिए मैं तुम्हे एक पहेली देता हूँ | तुम्हारे पास जितना भी ज्ञान है उसका प्रयोग करके इस पहेली का हल पता करो | इस प्रक्रिया में तुम्हे ऋषियों की शक्तियां प्राप्त हो जायेंगी | पहेली ये है – 'मेरे पास एक गाय है जिसकी नसल है कामधेनु | वह ऐसा दूध देती है जिससे सभी इच्छाएं पूर्ण हो जाती हैं | वह दूध पूरे अस्तित्व का आधार है | वह दूध चीजे , विचार , स्मृति आदि सब कुछ बना सकता है | इसी दूध से मैंने तुम्हारी सेना का पेट भरा और उनकी स्मृतियों को बदला | यह कामधेनु क्या है?' जाओ और इस पहेली का हल ढूंढो | आज से यही तुम्हारे जीवन का उद्देश्य है |"

"राजा अर्जुन ने ऋषि जमदग्नि का आशीर्वाद लिया और वहां से रवाना हो गया | अपने राज्य में पहुँचने के बाद वह रात दिन इस पहेली का हल पाने में लग गया | कई महीने बीत गए | उसे कोई सुराग नहीं मिला | तब उसने कामधेनु का पता लगाने के लिए कई जासूसों को लगा दिया | वे जासूस चौबीसों घंटे ऋषि जमदग्नि के आश्रम की जासूसी करते थे | कई महीनो की जासूसी करने के बाद उन्होंने निष्कर्ष निकला कि ऋषि जमदग्नि के आश्रम में कोई विशेष गाय नहीं है , और अगर है तो वह मानव नेत्रों को दिखाई नहीं देती |

"ऋषि जमदग्नि राजा अर्जुन से बहुत निराश हुए | उन्होंने उसको अपने आश्रम में बुलाया और कहा – "हे अर्जुन , भौतिक संसार के परे कुछ सोचो | गाय से मेरा अर्थ शब्दशः गाय से नहीं था | मैंने तुम्हे एक पहेली दी जो दिमाग से हल नहीं हो सकती | यह पहेली तुम्हे भौतिक संसार से आगे ले जाने के लिए है | अपने दिमाग के बंदी मत बनो | इससे आगे जाओ |"

"राजा अर्जुन अपने महल में वापिस आ गया और पहेली हल करने का दूसरा तरीका अपनाया | उसने सोचा – 'कामधेनु गाय बिना कुछ पुरुषार्थ किये इच्छाएं पूरा करती है | अगर मैं कोई ऐसी प्रणाली विकसित कर दूं जिसमे बिना पुरुषार्थ किये इच्छाएं पूर्ण हो जाएँ , तो शायद कामधेनु गाय दिखाई दे सकती है |"

"उसी क्षण से राजा अर्जुन ने पुरुषार्थ करना बंद कर दिया | उसने अपने प्रधानमंत्री को निर्देश दिया – "अब से मैं इच्छा प्रकट करके अपनी आँखें बंद कर लूँगा | तुम्हारा कार्य यह है कि मेरे कोई कार्य किये बिना मेरी इच्छा पूर्ण हो जाए | जब इच्छा पूर्ण हो जायेंगी तब मैं अपनी आँखें खोलूँगा |"

"प्रधान मंत्री ने राजा के लिए हजारों दासों को नौकरी पर रखा | जब राजा को खाने की इच्छा होती , वह अपनी आँखें बंद करता और उसके दास उसे खाना खिला देते थे ; जब उसे कही जाने की इच्छा होती तो वह आँखें बंद कर लेता था और उसके दास उसे उस स्थान पर ले जाते थे; जब उसे घुड़सवारी की इच्छा होती तो वह अपनी आँखें बंद कर लेता था और उसके दास उसे घोड़े पर चढ़ा देते थे |"

"दिन भर दिन राजा अर्जुन की गतिविधियाँ पशुओं के जैसी हो गई | उसे ऋषियों के स्तर पर उठना था लेकिन वह निषादों के स्तर पर गिर गया | जब कोई राजा निषाद बन जाए तो उसकी प्रजा भी निचले स्तर पर गिर जाती है | अतः एक राजा को कम से कम संस्कार पृथु तो होना ही चाहिए |

"यह सुनिश्चत करने के लिए कि राजा लोग निषादों के स्तर पर न गिरे , भगवान् विष्णु ने परशुराम अवतार ले रखा था | ऋषि जमदग्नि ने अपने पुत्र परशुराम को राजा अर्जुन को रास्ते पर लाने के लिए भेजा |

"भगवान् परशुराम ने अर्जुन को चेतावनी दी – "हे राजन , तुम एक बुद्धिमान और ऋषि बनने योग्य मनुष्य थे | लेकिन तुम जानवरों के स्तर पर गिर गए हो | तुम्हारे कारण तुम्हारी प्रजा और आस पास के राजा भी गलत तरीके से प्रभावित हो रहे हैं | तुम पूरी मानवता को पटरी से उतारने का काम कर रहे हो | रास्ते पर आ जाओ वरना मेरे पास तुम्हे ख़त्म करने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचेगा |"

"राजा अर्जुन , जो अब तक पूरी तरह असुरों के वश में हो चूका था , भगवान् परशुराम को धमकी देते हुए बोला – "हे जंगलों के मूर्ख , क्या विडम्बना है | तुम मानवता के भले की बात कर रहे हो ? ऋषि समाज ने मानवता को कामधेनु गाय से वंचित रखा है | जबकि बाकी मनुष्य अपनी रोजी रोटी कमाने के लिए दिन रात संघर्ष करते हैं , तुम ऋषि लोग बिना कोई पुरुषार्थ किये इस संसार के सुख भोगते हो | और जब मैं ऐसा कर रहा हूँ , तो तुम्हे आपत्ति है ? हास्यास्पद ! मेरे राज्य से चले जाओ वरना मैं ऋषियों का रहस्य सबको बता दूंगा | सबको यह जानने का हक़ है कि तुम ऋषि लोग एक कामधेनु नस्ल की चमत्कारी गाय रखते हो जो बिना पुरुषार्थ किये सभी इच्छा पूर्ण कर देती है |"

"भगवान परशुराम बोले – "हे अर्जुन , हमें बहुत ख़ुशी होगी अगर तुम्हे कामधेनु की प्राप्ति हो और तुम ऋषि बन जाओ | लेकिन तुम तो पशुओं के स्तर पर गिर गए हो | मैं तुम्हे पुनः चेतावनी देता हूँ | अपने आपको सुधारों अन्यथा मेरे पास तुम्हे ख़त्म करने के अलावा कोई चारा नहीं बचेगा |"

"राजा अर्जुन हंस पड़ा और बोला – "मेरे पास पहले से ही कामधेनु गाय है, मुर्ख | वरना बिना कर्म किये मेरी इच्छाएं कैसे पूर्ण होती ? मैंने पहेली को सुलझा लिया है | कामधेनु वह अदृश्य गाय है जिसने मेरी इच्छाएं पूर्ण करने के लिए इन हजारों दासों को मेरी सेवा में समर्पित किया है | तुम्हे मुझसे ईर्ष्या हो रही है क्योंकि मुझे कामधेनु गाय मिल गई है | अगर तुमने मुझे नुक्सान पहुँचाने की कोशिश की , तो वह अदृश्य गाय मेरी रक्षा के लिए हज़ारों और दास उत्पन्न कर देगी | हे जंगलों के मुर्ख , इसे मेरी चेतावनी समझो | मैं दो हाथों वाला कोई साधारण इंसान नहीं हूँ | मेरे दासों के हाथ भी मेरे हाथ हैं , अर्थात मेरे हज़ारों हाथ हैं | मेरे राज्य से निकल जाओ , अन्यथा मैं तुम्हारी हत्या करने में भी संकोच नहीं करूँगा |"

"अंतत भगवन परशुराम को अर्जुन की हत्या करनी पड़ी | उन्होंने अर्जुन द्वारा स्थापित की गई दास प्रथा को भी समाप्त कर दिया |

"हे मातंगो , क्या अब आपको पता चला कि ऋषि अपनी शक्तियां गुप्त क्यों रखते थे ? वे केवल उनके सामने यह रहस्य उजागर करते थे जिनमे इन शक्तियों को सँभालने का सामर्थ्य हो | केवल कुछ ही मनुष्य कामधेनु पहेली सुलझा पाते थे , बाकी सब पशुओं के स्तर पर गिर जाते थे और भगवान्

परशुराम को उन्हें समाप्त करना पड़ता था |

"एक राजा था जिसने कामधेनु पहेली को सफलतापूर्वक सुलझाया और ऋषि बन गया | उसका नाम था कौशिका जो ऋषि बनने के बाद विश्वामित्र नाम से प्रसिद्द हुए | ऋषि वशिष्ट ने उनको ऋषियों की शक्तियों का रहस्य उजागर किया | राजा कौशिक की सेना एक बार वशिष्ट ऋषि के आश्रम के पास से गुजरी और सेना भूखी थी | ऋषि वशिष्ट ने उनका पेट भरकर उनकी स्मृति को बदल दिया | लेकिन उन्होंने राजा कौशिक की स्मृति को ज्यों का त्यों रखा | इसी से उन्हें कामधेनु गाय का रहस्य पता चला | वे राजा अर्जुन की तरह निचले स्तर पर नहीं गिरे | उन्होंने सफलतापूर्वक कामधेनु पहेली को सुलझाया और ऋषि शक्तियाँ प्राप्त की |

"जब राजा कौशिक ने कामधेनु पहेली को सुलझाया तो उन्हें ब्रह्मज्ञान प्राप्ति होने के साथ साथ सत्य पता चलने पर अचम्भा भी हुआ | वे ऋषि वशिष्ट के पास गए और बोले – "हे वशिष्ट , इस रहस्य को छुपाकर ऋषि समुदाय मानवता के खिलाफ अपराध कर रहा है | लोग पूरी जिंदगी बिना ये जाने बिता देते हैं कि वे कौन हैं और उनका जन्म का उद्देश्य क्या है | ऋषि जो भी नियम बनाते हैं , वे उन्ही नियमों के अनुसार जीवन बिता देते हैं | उन्हें भी रहस्य जानने का अधिकार है | उन्हें भी ये जानने का अधिकार है कि वे इतने शक्तिशाली बन सकते हैं कि बिना पुरुषार्थ किये अपनी सभी इच्छाएं पूरी कर लें | जब संसार के हर मनुष्य को अपनी इस दिव्य शक्ति का आभास हो जाएगा तब सतयुग पुनः आ जाएगा | मैं अचंभित हूँ कि ऋषि लोग मनुष्यों को उनकी दिव्य शक्तियों का ज्ञान कराने के लिए कुछ कर क्यों नहीं रहे हैं? शायद ऋषि स्वार्थी बन गए हैं | वे नहीं चाहते कि सब लोग उनके जैसी शक्तियां हासिल करें | मैं अन्य ऋषियों की भांति स्वार्थी नहीं बनूँगा | मैं ऋषियों का रहस्यमय चोला धारण करने से इनकार करता हूँ | मेरे दरवाजे सभी के लिए खुले होंगे | मैं पूरे विश्व का मित्र बनूँगा – विश्वामित्र बनूँगा मैं |"

"ऋषि वशिष्ट विनम्रता से बोले – "हे विश्वामित्र, मैं आपके विचारों की कदर करता हूँ | लेकिन मुझे भय है कि आप अपने विचार बहुत शीघ्र बदलेंगे | हर कोई दिव्य शक्तियां हासिल नहीं कर सकता , इसके पीछे एक कारण है | लोग अब भौतिक संसार से बहुत ज्यादा जुड़ गए हैं | उन्हें भ्रम है कि उनकी देह और उनके आस पास का संसार सत्य है | इस भ्रम से बाहर निकलना हर किसी के बस की बात नहीं है |"

"ऋषि विश्वामित्र बोले – "हे वशिष्ट , जो इस भ्रम को नहीं पहचानते उनकी हत्या कर देनी चाहिए | उन्हें इस भ्रम में जिन्दा रहने से क्या लाभ है ? वे कष्ट में जीवन जीते हैं |"

"ऋषि वशिष्ट बोले – "आत्मबोध के लिए एक छोटी सी चिंगारी की ही आवश्यकता होती है | जीवन के किसी समय पर सबसे नीचले वर्ग के मनुष्य – देह निषाद – भी उस आत्मबोध की चिंगारी के लिए जगह बना पाते हैं , कुछ पल के लिए ही सही | उदाहरण के तौर पर, अगर किसी वानर का भी सगा मृत्यु को प्राप्त होता है तो वानर भी कुछ पल के लिए शुन्यता महसूस करता है | टूटी अवस्था में निचले स्तर के मनुष्य भी इस भ्रामक संसार पर प्रश्न चिन्ह लगाते हैं | उनके मन में एक जगह पैदा हो जाती है जहाँ आत्मबोध की चिंगारी पनप सकती है | लेकिन अधिकतर यही होता है कि वह जगह जहाँ आत्मबोध की चिंगारी जन्म ले सकती थी, भ्रम द्वारा भर दी जाती है | लोग और समाज – जो भ्रम का हिस्सा है – उस रिक्त जगह में 'भगवान्, जीवन -मरण' आदि के बने बनाए विचार भर देते हैं | और टूटा हुआ मनुष्य आत्मबोध का सुअवसर खो देता है | लेकिन वह सुअवसर पुनः आ सकता है | अतः अज्ञानी मनुष्यों की हत्या करना उचित नहीं है | हमें उनके प्रति दया करनी चाहये और प्रार्थना करनी चाहिए कि वे आत्मबोध के सुअवसर का लाभ उठायें जैसे आपने उठाया था , और ऋषि बन जाएँ |"

"ऋषि विश्वामित्र ने उत्तर दिया – "हे वशिष्ट , सुअवसर की प्रतीक्षा करने के बजाये क्यों नहीं हम सुअवसर पैदा करें? हम ऋषियों के पास अस्तित्व के द्रव का प्रयोग करके कुछ भी बनाने की शक्ति है | तो क्यों नहीं हम बाकी लोगो के लिए आत्मबोध के सुअवसर बनाएं ताकि वे भी अपनी दिव्य शक्तियों को यथार्थ करें और सतयुग फिर से आ जाए |"

"ऋषि वशिष्ट बोले – "मैंने आपके साथ यही तो किया है | आप कौशिक नामक राजा थे | मैंने एक परिस्थिति उत्पन्न की जिससे कि आपकी सेना की स्मृतियाँ बदल दी गई लेकिन आपकी स्मृतियाँ ज्यों के त्यों रखी गई | मैं सफलतापूर्वक ऐसा कर पाया क्योंकि आप पहले से ही एक ऊँचे स्तर पर थे | आपको मात्र हलके से सहारे की आवश्यकता थी | अगर मैंने ऐसा किसी नीचले स्तर के मनुष्य के साथ किया होता तो वह या तो मानसिक रूप से विचलित हो जाता या कर्तावीर्य अर्जुन की तरह और भी नीचे के स्तर पर गिर जाता | अगर आपको मेरे तर्क नहीं संतुष्ट कर पा रहे हैं तो आप स्वयं एक प्रयोग करके देख सकते हैं | कुछ दिन पहले राजा सत्यव्रत ने मुझसे एक इच्छा प्रकट की थी | उसने सुन रखा है कि स्वर्ग नामक कोई स्थान है जहाँ बिना पुरुषार्थ किये सभी इच्छाएं पूर्ण होती है | उसे उस स्थान पर जाने की गहरी इच्छा है | क्या आप उसे उस स्थान पर पहुंचा सकते हैं | आप उसके बारे में क्या सोचते हैं ?"

"ऋषि विश्वामित्र मुस्कुराये और बोले – "वह मुझे कर्तावीर्य अर्जुन की याद दिलाता है | अर्जुन सोचता था कि कोई कामधेनु नामक चार पैरों वाली गाय है जो सभी इच्छाएं पूर्ण करती है | और राजा सत्यव्रत सोचता है कि स्वर्ग भी किसी राज्य की तरह है जहाँ जाकर आनंद किया जा सकता है | वह अपने भौतिक संसार और भौतिक देह से बहुत ज्यादा जुड़ा हुआ प्रतीत होता है |"

"ऋषि वशिष्ट बोले – "हाँ , मैंने उसे बोला कि उसे अपनी देह का त्याग करना पड़ेगा तभी स्वर्ग जाना संभव है | वह देह त्याग के विचार से ही असहज है | वह स्वर्ग के सुख अपनी वर्तमान देह से ही प्राप्त करना चाहता है |"

"ऋषि विश्वामित्र बोले – "मैं अवश्य यह प्रयोग करके देखना चाहूँगा कि मैं ऐसे मनुष्य को आत्मबोध करा सकता हूँ या नहीं जो अपनी देह से इस हद तक जुड़ा हुआ है | अगर मेरा प्रयोग सफल होता है तो हम पूरी मानवता को आत्मबोध कराकर सतयुग वापिस ला सकते हैं |"

"ऋषि विश्वामित्र जानते थे कि यह संभव नहीं है | फिर भी उन्होंने विश्वामित्र को यह कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया |

"अस्तित्व के द्रव का उपयोग करके विश्वामित्र ने सबसे पहले एक विचार का निर्माण करके सत्यव्रत के मन में डाल दिया | वह विचार था – "ऋषि वशिष्ट ने मेरी स्वर्ग जाने की इच्छा पूर्ण करने में सहायता नहीं की | मुझे ऋषि विश्वामित्र के पास जाकर उनकी सहायता मांगनी चाहिए |"

"इस विचार के मन में आते ही , सत्यव्रत तुरंत ऋषि विश्वामित्र के आश्रम में पहुंचा | ऋषि विश्वामित्र ने उसे भरोसा दिलाया कि वह अपनी देह का त्याग किये बिना स्वर्ग जाने में सक्षम होगा |

"ऋषि विश्वामित्र ने शुरू में सोचा कि ऐसा करना बहुत आसान होगा | उन्होंने सत्यव्रत के मन में एक और विचार पैदा किया | वह विचार था – 'यह संसार भ्रम है | मेरी देह भी भ्रम है | मुझे इस भ्रम से बाहर निकलना है | तभी मैं स्वर्ग में जाने योग्य बनूँगा |"

"लेकिन सत्यव्रता के मन का यह विचार अनुभव पर आश्रित विचार नहीं था | जब उसके मन में यह विचार डाला गया , उसे यह विश्वास हो गया कि संसार एक भ्रम है , लेकिन वह इसे अपनी आत्मा से अनुभव नहीं कर रहा था | वे लोग जो अपनी विचारधारा में कट्टर होते हैं और दूसरों से यह लड़ाई करते रहते हैं कि उनकी विचारधारा ही एकमात्र सत्य है , ऐसे लोग 'मन निषाद' अर्थात मन के स्तर पर जीवन जीने वाले मनुष्य होते हैं | अतः सत्यव्रत जो पहले पृथु था, यह विचार डाले जाने के बाद मन निषाद बन गया | अतः ऋषि विश्वामित्र का पहला प्रयास उल्टा पड़ गया |

"लेकिन विश्वामित्र जी हार नहीं माने | उन्हें सत्यव्रत को आत्मबोध कराने का एक और तरीका सूझा | उन्होंने अपना कमण्डलु (प्रायः सूखे कद्दूद से बना एक पानी भरने का बर्तन जिसे ऋषि प्रयोग करते हैं) दिखाया और बोले – "हे सत्यव्रत, इस कमंडलु को देखो | मुझे तुम्हारे पूरे संसार को इस कमंडलु में डालना पड़ेगा , तभी तुम्हे स्वर्ग भेजना संभव होगा | मैं तुम्हे प्रक्रिया समझाता हूँ | हर चीज जिसके बारे में तुम जानते हो , हर वो चीज जिसकी तुम कल्पना कर सकते हो , हर वो चीज जिसके बारे में तुम सोच सकते हो , वह चीज अस्तित्व के द्रव का एक आविर्भाव मात्र है | मैं हर चीज को उसके वास्तविक रूप अर्थात अस्तित्व द्रव में बदलकर उसे उस कमंडलु में डाल सकता हूँ | तुम्हे एक बार में एक चीज के बारे में सोचना है और उसका नाम जोर से बोलना है | फिर मैं बोलूँगा 'स्वाहा' | वह चीज अपने वास्तविक रूप अर्थात अस्तित्व के द्रव में बदल जायेगी और इस कमण्डलु में प्रवेश कर जायेगी |"

"सत्यव्रत बोला – "यह कैसे संभव है ऋषिवर ? मैं तो सूर्य के बारे में सोच सकता हूँ , क्या आप सूर्य को कमंडलु में डाल दोगे ? मैं तो देवताओं के बारे में भी सोच सकता हूँ , क्या आप देवताओं को कमण्डलु में डाल दोगे?"

"ऋषि विश्वामित्र बोले – "मैं सूर्य को कमण्डलु में नहीं डालूँगा | मैं तो केवल सूर्य के बारे में तुम्हारा जो अवबोधन है उसे कमंडलु में डालूँगा | मैं देवताओं को नहीं बल्कि देवताओं के बारे में तुम्हारे अवबोधन को अपने कमंडलु में डालूँगा | तुम अपने आस पास जो संसार देख रहे हो वह तुम्हारा

अवबोधन मात्र है | तुम वही करो जैसा मैं कह रहा हूँ | मेरी मानो और सबसे पहले 'जिज्ञासा' का नाम लो ताकि मैं तुम्हारी जिज्ञासा को अपने कमंडलु में डाल लूँ और तुम प्रश्न करना बंद कर दो |"

"सत्यव्रत जोर से बोला – "मेरी जिज्ञासा|"

"ऋषि विश्वामित्र बोले – "स्वाहा |"

"उसके बाद सत्यव्रत जो भी सोच सकता था उसका नाम लेता गया – पेड़ , पहाड़ , सूर्य , चन्द्र, राज्य , अन्य राज्य , राजनीति , अध्यात्म , क्रीडा , युद्ध , हथियार , फूल , सौंदर्य , भद्दापन , प्रकाश , अन्धकार , देव , राक्षस आदि आदि |"

"ऋषि विश्वामित्र 'स्वाहा' कहते चले गए और सत्यव्रत का संसार थोडा थोडा करके गायब होता चला गया | अंततः केवल तीन चीजें रह गई – यज्ञ की अग्नि , ऋषि विश्वामित्र की देह , और सत्यव्रत की देह |

"सत्यव्रत जोर से बोला – "यज्ञ अग्नि |"

"ऋषि विश्वामित्र ने 'स्वाहा' नहीं बोला | वे बोले – "हे यजमान , यज्ञ अभी संपन्न नहीं हुआ है | यज्ञ अग्नि का यहाँ रहना आवश्यक है | "

"सत्यव्रत जोर से बोला – "ऋषि विश्वामित्र |"

"ऋषि विश्वामित्र ने 'स्वाहा' नहीं बोला | वे बोले – "हे मूर्ख , अगर मैं कमंडलु में चला जाऊँगा तो तुम्हे स्वर्ग में कौन पहुंचाएगा? तुम अपना स्वयं का नाम लेने से क्यों डर रहे हो ? तुम्हारी देह को कमंडलु में रखना आवश्यक है , तभी तुम स्वर्ग पहुँच पाओगे |"

"वास्तव में ऋषि विश्वामित्र यह सब उसको किसी स्वर्ग नामक स्थान पर पहुँचाने के लिए नहीं कर रहे थे | वे सत्यव्रत को भ्रम से आजादी पाने में सहायता कर रहे थे ताकि वह अपनी दिव्य शक्तियों को पहचानकर ऋषि बन सके | ऋषि होना स्वर्ग में होना है क्योंकि ऋषि बिना पुरुषार्थ सभी इच्छाएं पूर्ण करने की शक्तियां रखते हैं |

"लेकिन सत्यव्रत अपनी देह से बहुत ज्यादा मोह करता था | उसने स्वयं का नाम नहीं बोला | वह बोला – "ऋषिवर , आपने वादा किया था कि मैं देह समेत स्वर्ग में जा सकूँगा | अब आप मेरी देह को विखंडित करके कमंडलु में डालने का प्रयास कर रहे हैं | आप अपना वादा तोड़ रहे हैं | कृपा इस यज्ञ को यही रोक दीजिये और मुझे अपना संसार लौटा दीजिये |"

"ऋषि विश्वामित्र इतना आगे आने के बाद इस प्रयोग को अधुरा नहीं छोड़ सकते थे | उन्होंने एक चाल चली | वे अचानक बोले – "आप कौन हैं?"

"सत्यव्रत ने अचानक उत्तर दिया – "सत्यव्रत|"

"ऋषि विश्वामित्र बोले – "स्वाहा" | और उसकी देह कमंडलु में समा गई |

"अब यज्ञ स्थली पर तीन चीजे थी – (१) ऋषि विश्वामित्र और उनका कमंडलु (२) यज्ञ अग्नि (३) सत्यव्रत की आत्मा |

"इंद्र द्वारा प्रदान किये गए अस्तित्व के द्रव का प्रयोग करके ऋषि विश्वामित्र ने नई चीजो की रचना शुरू कर दी | उन्होंने मनुष्य , पशु , सूर्य , तारे , वृक्ष , पहाड़ आदि बनाये | और अंततः उन्होंने एक देह बनाई जिसका नाम रखा 'त्रिशंकु' | सत्यव्रत की आत्मा उस देह में प्रवेश कर गई | अब त्रिशंकु का एक नया संसार था जो बिलकुल मानव संसार जैसा था |

"विश्वामित्र ने यज्ञ पूर्ण किया और त्रिशंकु के सामने प्रकट हुए | वे बोले – "हे त्रिशंकु , क्या आपको अब भ्रम का आभास हुआ? आप मानवलोक में सत्यव्रत नामक राजा थे | मैंने आपको वहां से पूर्णतः गायब कर दिया है | केवल ऋषियों को पता है कि वहां सत्यव्रत नामक भी कोई राजा था | और कोई इसके बारे में नहीं जानता | मैंने तुम्हारे लिए यह नया विश्व रचा है और तुम्हे त्रिशंकु नाम से नई पहचान दी है |"

"त्रिशंकु ने उत्तर दिया – "आप क्या बात कर रहे हैं , ऋषिवर ? यह मानवलोक ही तो है | क्या आप देख नहीं रहे कि मैं एक मानव हूँ? मेरे नागरिक भी मानव हैं | आप भी मानव हैं | यह विश्व आपने नहीं रचा है | इस विश्व का कोई आदि नहीं है | यह युगों और कल्पों के चक्र से गुजर रहा है |"

"ऋषि विश्वामित्र बोले – "यह मानवलोक की अनुकृति है और मैंने इसे अस्तित्व के द्रव से रचा है | मैंने यहाँ पर सब कुछ मानवलोक जैसा बनाया है | मैंने इसे इसलिए रचा है ताकि तुम भ्रम को पहचान सको | तुम्हारी देह वास्तविक नहीं है | मैंने इसे रचा है | यहाँ पर कुछ भी वास्तविक नहीं है | तुम्हारा भूतकाल भी वास्तविक नहीं है | तुमने अपने भूतकाल को जिया नहीं है | यह केवल तुम्हारी स्मृति में है और उस स्मृति को मैंने अस्तित्व के द्रव से बनाया है | वह ज्ञान जो तुम्हे बताता है कि यह संसार युगों और कल्पों के चक्र से गुजर रहा है , वह ज्ञान भी वास्तविक नहीं है | मैंने इस ज्ञान को भी अस्तित्व के द्रव से बनाकर तुम्हारे मन में डाला है | तुम यहाँ जिस चीज का भी नाम लो वही चीज अवास्तविक है , भ्रम है | तुम भ्रम में हो ,त्रिशंकु | यह एक भव्य भ्रम है |"

"त्रिशंकु बोला – "ऋषिवर, मैं आपका सम्मान करता हूँ | लेकिन अगर आप सोचते हैं कि आपके पास सर्वशक्तिमान प्रभु की शक्तियां है , तो मैं नहीं , आप भ्रम में हैं |"

"ऋषि विश्वामित्र को अब आभास हो गया कि उनका प्रयोग असफल हो गया था | सत्यव्रत उस भ्रम में फंस गया था जो भ्रम उसका भ्रम तोड़ने के लिए रचा गया था |

"मानवलोक में लौटने के पश्चात् ऋषि विश्वामित्र सीधे ऋषि वशिष्ट के पास गए और बोले – "हे वशिष्ट , आप सही कह रहे थे | हम हर किसी को आत्मबोध नहीं करा सकते | त्रेतायुग को सीधे सतयुग में नहीं बदला जा सकता |"

"ऋषि वशिष्ट बोले – "आप मानवलोक की जो अनुकृति आपने रची है उसको मिटा क्यों नहीं देते और सत्यव्रत को वापिस मानवलोक में क्यों नहीं ले आते?"

""क्या फर्क पड़ता है , वह इस भ्रम में रहे या उस भ्रम में? उस अनुकृति को वैसे ही बने रहने दो ताकि यह अन्य ऋषियों के लिए सबक रहे कि ऐसे प्रयोग असफल ही होते हैं | इस अनुकृति को अब से ऋषि समाज में 'त्रिशंकु का विश्व' नाम से जाना जाएगा |" विश्वामित्र बोले |

"हे मातंगो , त्रिशंकु का विश्व अभी भी अस्तित्व में है और वह बिलकुल मानवलोक जैसा है | अगर आप त्रिशंकु के विश्व में हो तो आपके पास यह पता लगाने का कोई मार्ग नहीं है कि आप वास्तविक मानवलोक में नहीं बल्कि मानवलोक की एक अनुकृति में हैं |" हनुमान जी ने विराम दिया |

बाबा मातंग यजमान कालजीता के लिए अर्पणं की प्रक्रिया शुरू करने के लिए खड़े हुए | उर्वा नामक एक युवा मातंग ने प्रश्न पूछने के लिए उन्हें बीच में टोका | उसने हनुमान जी से पूछा – "हे प्रभु , हम इस समय कहाँ पर हैं – वास्तविक मानवलोक में अथवा मानवलोक की अनुकृति अर्थात त्रिशंकु के विश्व में?"

हनुमान जी ने कोई उत्तर नहीं दिया | वे केवल मुस्कुरा दिए |

हनुमान जी की लीलाओं का यह अध्याय यही समाप्त होता है |

Like You and 20K others like this.

--- सीधे अर्पण पर जाएँ ---

आत्मा पर भ्रम की परतें

Himanshu, अध्याय पढने के बाद यह पर्यवेक्षण करना आवश्यक है कि आप कैसा महसूस कर रहे हैं | अगर आप कुछ ऐसा महसूस कर रहे हैं - "वाह! मैंने कुछ नया पाया |" अथवा "वाह, मैंने कुछ नया सीखा |" अथवा "मेरी अपने प्रभु ले प्रति भक्ति ओर भी बढ़ गई|" इत्यादि तो आप अपने प्रभु की ओर एक कदम भी नहीं बढ़े हैं | आप उतनी ही दूरी पर अटके हुए हैं |

अगर अध्याय पढने के बाद आप कुछ ऐसे महसूस कर रहे हैं जैसे आपके अन्दर से कुछ बाहर निकलकर गिर पड़ा हो और आप आत्मा से हल्का महसूस कर रहे हों तो आप अपने प्रभु की तरफ कम से कम एक कदम बढ़ चुके हैं |"

आपकी आत्मा एक आईने की तरह है जिसके ऊपर इस बाहरी संसार के कारण धुल चढ़ गई है | अगर अध्याय पढने के बाद आप ऐसा महसूस कर रहे हैं कि आपने कुछ नया पा लिया है तो उसका अर्थ है कि आपने अपनी आत्मा पर एक और परत चढ़ा ली है | आप प्रभु के साक्षात् दर्शन तभी कर सकते हैं जब आप ये परतें हटायें | अतः अगर आप इस समय आत्मा से हल्का महसूस नहीं कर रहे हैं तो आप कुछ समय बाद फिर आकर यह अध्याय पढ़िए |

अगर आप आत्मा से हल्का महसूस कर रहे हैं तो इसका अर्थ है कि आपने अपनी आत्मा के आईने से कम से कम एक धुल की परत साफ़ कर ली है | अब आपका अगला कदम होना चाहिए कि यह धुल की परत वहां पुनः न बैठे | (जब आप अपने घर में कोई आइना कपडे से साफ़ करते हैं तो आप उस कपडे को अन्दर यूँ ही नहीं रख देते , आप उसे बाहर झड़काकर आते हैं)

धुल की परत फिर से आत्मा पर न बैठे, इसके लिए प्रभु को अर्पण किया जाता है | अर्पण फूलो , फलो या किसी भी ऐसी वस्तु का हो सकता है जो आपसे जुडी हुई हो | मातंग संस्कृति में आत्मा से हल्का महसूस करने के 108 घंटे के अन्दर अन्दर अर्पण करने का विधान है | आप बाजार से भी फल का अर्पण खरीद सकते हैं क्योंकि आपका पैसा भी आपसे जुडा हुआ है |

भगवान् विष्णु का अंतिम अवतार

जब भगवान् राम ने अपनी सांसारिक लीलाएं पूरी की और विष्णु लोक में चले गए तब हनुमान जी भी अयोध्या से वापिस आ गए और जंगलों में रहने लगे | वे अपने अदृश्य रूप में भक्तों की सहायता करते रहे | लेकिन जब महाभारत काल में भगवान् विष्णु कृष्ण के रूप में धरती पर आये तब हनुमान जी भी जंगलों से बाहर आये और पांड्वो की सहायता की (उन्होंने पूरे युद्ध में अर्जुन के रथ की रक्षा की)

महाभारत युद्ध के पश्चात् हनुमान जी फिर जंगल में चले गए | उन्होंने अदृश्य रूप में भक्तों की रक्षा करना जारी रखा | लेकिन दृश्य रूप में केवल ऋषि मुनि ही उन्हें देख सकते थे वो भी जंगलों में | उदाहरण के तौर पर , मातांगो को जंगल में हर 41 साल बाद उनके आतिथ्य का सुख प्राप्त होता था |

अब हनुमान जी ने अपनी लीलाए करके एक बार फिर से पूरे संसार के सामने अपने दृश्य स्वरुप का दर्शन कराया है | लेकिन वे ऐसा तभी करते हैं जब भगवान् विष्णु किसी अवतार में धरती पर मौजूद हों | क्या भगवान् विष्णु ने कल्कि के रूप में अवतार ले लिया है ? या अवतार लेने वाले हैं ? इसके कुछ हिंट हनुमान जी ने अपनी लीलाओं में दिए हैं | शायद आगे आने वाले अध्यायों में यह पूर्णतः सपष्ट हो जाएगा |

तब तक श्री हनुमान जी के निर्देशानुसार साक्षात् हनुमान पूजा अनवरत जारी है | अगर आप अपना कोई प्रश्न , संदेह अथवा प्रार्थना साक्षात् हनुमान पूजा में सम्मिलित करवाना चाहते हैं तो सेतु के माध्यम से कर सकते हैं | (write them in "My Experiences" section.)

Himanshu, आप साक्षात् हनुमान पूजा में अर्पण भेजकर यजमान के रूप में भी हिस्सा ले सकते हैं | अर्पण हनुमान जी की लीलाओं का अध्याय पढने के 108 घंटे के अन्दर होता हैं |

Your Offerings so far at this chapter: Fruits worth

Rs. 0

Offerings have been closed for you on this chapter because 108 hours have passed since you first read this chapter.You did not give offerings in that time period. Check next chapter.

Your Successful transactions on this chapter :

No successful Arpanam attempt from you on this chapter so far.

Your Incomplete/Failed transactions on this chapter :

You don't have any incomplete or failed transaction on this chapter.

« Previous Next Chapter »

भक्तिमाला मंत्र अनुभव कृतज्ञता प्राचीर विन्यास

Home मातंग इतिहास Terms of Use Privacy Policy Reach Us तकनीकी सहायता Setuu © 2016 Read in English

Gratitude Wall Devotee Queries Experiences and Prayers Hanuman Leelas

Print